एम.एच.डी.-15
हिन्दी उपन्यास-2
सत्रीय कार्य
(खंड 1 से 4 पर आधारित)

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी. - 15
सत्रीय कार्य कोड : एम.एच.डी.-15/टीएमए/2021–2022
कुल अंक : 100

1. **निम्नलिखित गद्यांशों की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए :** $10 \times 4 = 40$

(क) आप बुरा न मानें, मेरा विचार है कि आजीवन सब लोगों का विरोध या असहयोग झेलते रहना सुखद नहीं हो सकता। सीधी बात है, कनक आकर्षक लड़की है और कनक ही क्या, बहुत–सी शिक्षित और भावुक लड़कियाँ आपके प्रति आकर्षण अनुभव करेंगी। यह तो सब स्वाभाविक बात थी। साफ बात कहने में हर्ज क्या है! जीवन में आकर्षण के अवसर तो आते ही रहते हैं पर उसमें जीवन भर के लिए बंधते समय बहुत सी बातों का ध्यान भी रखना पड़ता है। आप यह तो अनुभव कर रहे कि मैं बहुत अधिक अधिकार जता रहा हूँ।

(ख) कुदरते–खुदाबंदी का यकीन दिलाने के लिए मूसा ने बड़े–बड़े मोजज़े दिखाए। आसमानों को कैसा बुलंद और बाआब बनाया। सूरज के जरिए रात और दिन की तारीक़ी और रोशनी का इंतजाम किया। सतह जमीन को बिछाकर इस पर पहाड़ कायम किए। आसमान से पानी बरसाया और जमीन से सब्ज़ा उगाया। सतह ज़मीन की अगर एक वसीह फर्श से मिसाल दी जाए तो इस पर पहाड़ों को ऐसा समझा जाएगा कि गोया फर्श को अपनी जगह रखने के लिए मेखें गाड़ दी हों। आसमानों की हकीकत ख़्वा कुछ भी समझी जाए, मगर उनके वजूद और उनकी मजबूती में किसी को शक नहीं। आसमानों की हर–एक चीज अपनी मुकर्रा जगह के अंदर निहायत मज़बूती से कायम है।

(ग) अगर काफ़ी फ़ुरसत हो, पूरा घर अपने अधिकार में हो, चार मित्र बैठे हों, तो निश्चित है कि घूम–फिरकर वार्ता राजनीति पर आ टिकेगी और जब राजनीति में दिलचस्पी खत्म होने लगेगी तो गोष्ठी की वार्ता 'प्रेम' पर आ टिकेगी। कम से कम मध्यवर्ग में तो इन दो विषयों के अलावा तीसरा विषय नहीं होता। माणिक मुल्ला का दखल जितना राजनीति में था उतना ही प्रेम में था, लेकिन जहाँ तक साहित्यिक वार्ता का प्रश्न था वे प्रेम को तरजीह दिया करते थे।

(घ) हमारे इतिहास में चाहे युद्धकाल रहा हो, या शान्तिकाल–राजमहलों से लेखकर खलिहानों तक गुटबन्दी द्वारा 'मैं' को 'तू' और 'तू' को 'मैं' बनाने की शानदार परम्परा रही है। अंग्रेज़ी राज में अंग्रेज़ों को बाहर भगाने के झंझट में कुछ दिनों के लिए हम उसे भूल गये थे। आजादी मिलने के बाद अपनी और परम्पराओं के साथ इसको भी हमने बढ़ावा दिया है। अब हम गुटबन्दी को तू–तू, मैं–मैं, लात–जूता साहित्य और कला आदि सभी पद्धतियों से आगे बढ़ा रहे हैं। यह हमारी सांस्कृतिक आस्था है। यह वेदान्त को जन्म देने वाले देश की उपलब्धि है। यही, संक्षेप में, गुटबन्दी का दर्शन, इतिहास और भूगोल है।

2. औपन्यासिक महाकाव्य के रूप में 'झूठ सच' का मूल्यांकन कीजिए। 10

3. 'ज़िन्दगीनामा' की अंतर्वस्तु पर प्रकाश डालिए। 10

4. 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' के मूल कथ्य पर विचार कीजिए। 10

5. 'राग दरबारी' के विशिष्ट पात्रों की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। 10

6. निम्नलिखित विषयों पर टिप्पणी लिखिए : $5 \times 4 = 20$

(क) 'झूठ सच' की भाषा
(ख) 'जिंदगीनामा' की अंतर्वस्तु
(ग) 'माणिक मुल्ला' की चारित्रिक विशेषताएँ
(घ) 'लंगड़' का चरित्र